*Enhanced Edition
NEP 2020 Guidelines

ज्ञान सरोवर हिंदी व्याकरण

अध्यापक सहायक-पुस्तिका

8

YELLOW BIRD PUBLICATIONS PVT. LTD.
EDUCATIONAL PUBLISHER

ज्ञान सरोवर हिंदी व्याकरण कक्षा-8

अध्याय-1 – भाषा और व्याकरण

(क) 1. (स), 2. (ब), 3. (ब), 4. (ब)।

(ख) 1. रोमन, 2. अनेक, 3. देवनागरी, 4. बोली।

(ग) 1. (✗), 2. (✗), 3. (✓), 4. (✓)।

लिखित

1. भाषा के दो रूप होते हैं–(क) मौखिक या उच्चरित भाषा, (ख) लिखित भाषा
   (क) मौखिक या उच्चरित भाषा–भाषा का वह रूप, जिससे हम अपने विचारों एवं भावों को बोलकर व्यक्त करते हैं तथा सुनकर समझते हैं, उसे **मौखिक भाषा** कहते हैं। मौखिक अर्थात् मुख से बोली गई। मनुष्य ने सर्वप्रथम मौखिक भाषा का ही प्रयोग करना सीखा था। यह भाषा ध्वनियों में प्रकट की जाती है। भाषा का यह रूप परिवर्तनशील है। यही भाषा का मूल रूप है। मौखिक भाषा को **कथित भाषा** भी कहते हैं। वार्तालाप, काव्य-पाठ, कहानी सुनाना, भाषण, समाचार-वाचन, वाद-विवाद, नाटक, रेडियो एवं दूरदर्शन के कार्यक्रम आदि भाषा के मौखिक रूप हैं।
   (ख) लिखित रूप–जब हम अपने मन के विचारों या भावों को लिखकर प्रकट करते हैं, तो उसे भाषा का **लिखित रूप** कहते हैं। जैसे–विभिन्न प्रकार के साहित्य, पत्र, तार, दूरदर्शन पर दिखाई गई लिखित सूचना एवं समाचार-पत्र आदि।
   भाषा का लिखित रूप अत्यधिक महत्वपूर्ण है; क्योंकि इससे हम अपने भावों या विचारों को लाखों लोगों तक पहुँचा सकते हैं, इससे अपने भावों-विचारों को लंबे समय तक सुरक्षित रख सकते हैं। अपने पूर्वजों के विचारों एवं भावों से भी हम भाषा के लिखित रूप से ही परिचित होते हैं।
2. संप्रेषणीयता और अर्थग्रहण की दृष्टि से भाषा को सर्वग्राह्य बनाने के लिए उसमें एकरूपता लाना आवश्यक होता है। बोल-चाल के स्तर पर हिंदी के कई रूप प्रचलित होने के बावजूद हिंदी का अपना स्वीकृत मानक रूप भी है, जो **मानक हिंदी** कहलाता है। मानक रूप में सबसे बड़ा लाभ यह है कि जहाँ कहीं भी हिंदी का प्रयोग होता है, वहाँ इसी मानक रूप को स्वीकार किया जाता है।
3. व्याकरण के निम्नलिखित चार अंग हैं– (क) वर्ण-विचार, (ख) शब्द-विचार, (ग) वाक्य-विचार एवं (घ) वाक्य-रचना।
4. भाषा के क्षेत्रीय रूप को **बोली** कहते हैं। इसका क्षेत्र सीमित होता है। इसका प्रयोग सरकारी काम-काज में नहीं किया जाता है। जैसे–हरियाणवी, राजस्थानी, भोजपुरी, बुंदेली एवं मैथिली आदि।

विविध

(क) 1. संस्कृत – देवनागरी 2. अंग्रेजी – रोमन 3. पंजाबी – गुरूमुखी
4. मराठी – देवनागरी 5. जर्मन – रोमन

अध्याय-2 – वर्ण-विचार

(क) 1. (स), 2. (अ), 3. (ब), 4. (स), 5. (अ)।

(ख) 1. वर्ण-विच्छेद, 2. 27, 3. मूर्धन्य, 4. अंत:स्थ व्यंजन, 5. आगत।

(ग) 1. (✗), 2. (✓), 3. (✗), 4. (✓), 5. (✗)।

लिखित

1. स्पर्श व्यंजन : जिन व्यंजनों को बोलते समय वायु कंठ से निकलकर मुख के भागों को स्पर्श करते हुए बाहर निकलती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं।
2. वर्णमाला का अर्थ है– वर्णों की माला। भाषा के निश्चित समूह से वर्णमाला तैयार की जाती है। वर्णमाला वर्णों का व्यवस्थित समूह है।
3. ह्रस्व स्वर–जिन स्वरों को बोलते समय कम-से-कम या एक इकाई (एक मात्रा) के बराबर समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। ये संख्या में चार हैं–अ, इ, उ, ऋ।
4. संयुक्त व्यंजन–जब दो या दो से अधिक व्यंजनों का संयोग होता है, तो उन्हें संयुक्त व्यंजन कहते हैं। इनकी संख्या चार है–क्ष, त्र, ज्ञ, श्र।

   क्ष = क् + ष् + अ **त्र** = त् + र् + अ

   ज्ञ = ज् + ञ् + अ **श्र** = श् + र् + अ
5. फारसी भाषा से ली गई ध्वनियों के वर्णों (क़, ख़, ग़, ज़, फ़) के नीचे लगा बिंदु (़) नुक्ता कहलाता है।

(ख) 1. प, फ का उच्चारण स्थान है – ओष्ठ्य
2. अनुस्वार का चिह्न – (ं)
3. ऊष्म व्यंजन होते हैं – चार
4. दीर्घ स्वर होते हैं – सात
5. आगत ध्वनियाँ हैं – ऑ, ज़, फ़

विविध

(क)

नाम	**वर्ण-विच्छेद**
राम	र् + आ + म + अ
नरेश	न् + अ + र् + ए + श् + अ
रमेश	र् + अ + म् + ए + श् + अ

महेश – म् + अ + ह् + ए + श् + अ

राकेश – र् + अ + क् + ए + श् + अ

(ख) 1. चमत्कार – च् + अ + म् + अ + त् + क् + आ + र् + अ

2. सौगंध – स् + औ + ग् + अं + ध् + अ

3. अक्षमता – अ + क् + ष् + अ + म् + अ + त् + आ

4. धार्मिक – ध् + आ + र् + इ + म् + क् + अ

5. उच्चारण – उ + च् + च् + आ + र् + अ + र् + अ + ण् + अ

(ग) 1. प्रतिज्ञा – प् + र् + अ + त् + इ + ज् + ञ + अ

2. बुद्धि – ब + उ + द् + ध् + इ

3. चक्रव्यूह – च् + अ + क् + र् + अ + व् + य् + ऊ + ह + अ

अध्याय-3 – संधि

(क) 1. (ब), 2. (स), 3. (अ), 4. (स), 5. (अ)।

(ख) 1. (✓), 2. (✗), 3. (✗), 4. (✓), 5. (✓)।

(ग) 1. तपोभूमि = तपः + भूमि 2. सज्जन = सत् + जन

3. प्रत्येक = प्रति + एक 4. भवन = भो + अन

5. परिणाम = परि + नाम 6. पावन = पौ + अन

7. स्वागत = सु + आगत 8. उच्चारण = उत् + चारण

(घ) 1. यति + इंद्र = यतींद्र 2. अति + इव = अतीव

3. प्रति + अंग = प्रत्यंग 4. मनः + योग = मनोयोग

5. देव + ऋषि = देवर्षि

(ङ) 1. दो वर्णों के परस्पर मेल से उत्पन्न विकार या परिवर्तन को संधि कहते हैं। जैसे- विद्या + आलय = विद्यालय।

2. विकार (परिवर्तन) के आधार पर संधि के मुख्य रूप से तीन भेद होते हैं– (क) स्वर संधि, (ख) व्यंजन संधि एवं (ग) विसर्ग संधि।

3. दीर्घ संधि–समान स्वरों के बीच होने वाली संधि दीर्घ संधि कहलाती है। जैसे–

अ + अ = आ	सार + अंश = सारांश
अ + आ = आ	धर्म + आत्मा = धर्मात्मा
आ + अ = आ	रेखा + अंकित = रेखांकित
आ + आ = आ	विद्या + आलय = विद्यालय

इ + इ = ई	कवि + इंद = कवींद्र
इ + ई = ई	प्रति + ईक्षा = प्रतीक्षा
ई + इ = ई	नारी + इच्छा = नारीच्छा
ई + ई = ई	नदी + ईश = नदीश
उ + उ = ऊ	लघु + उत्तर = लघूत्तर
उ + ऊ = ऊ	लघु + ऊष्मा = लघूष्मा

4. विसर्ग संधि–विसर्ग (:) के बाद स्वर या व्यंजन के आने पर विसर्ग में जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं। जैसे–
   मनः + अनुकूल = मनोनुकूल पयः + धर = पयोधर
5. अयादि संधि–यदि ए या ऐ तथा ओ या और के बाद कोई भिन्न स्वर आ जाए तो ए का 'अय', ऐ का आय, ओ का अव तथा औ का आव हो जाता है।

ए + अ	= अय	ने + अन	= नयन
ऐ + अ	= आय	गै + अक	= गायक
ओ + अ	= अव	भो + अन	= भवन
औ + अ	= आव	पौ + अक	= पावक
औ + इ	= आव	नौ + इक	= नाविक
औ + उ	= आवु	भौ + उक	= भावुक

विविध

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. शिवायलय 2. सम् + भव 3. द + वासन
4. नित्यानंद 5. अभ्युदय 6. लंका + ईश
7. उत् + लेख 8. नारीच्छा 9. पौ + अक
10. वागीश

अध्याय-4 – समास

(क) 1. (स), 2. (ब), 3. (स), 4. (द)।

(ख) 1. (✗), 2. (✗), 3. (✗), 4. (✗), 5. (✗)।

(ग)

1. विद्यालय	–	तत्पुरुष समास
2. प्रतिवर्ष	–	अव्ययीभाव समास
3. शताब्दी	–	द्विगु समास
4. रुपया–पैसा	–	द्वंद्व समास
5. दशानन	–	बहुव्रीहि समास

(घ)

समस्त पद	समास-विग्रह	समास का नाम
1. प्रेममग्न	प्रेम में मग्न	तत्पुरुष समास
2. प्रतिदिन	दिन-दिन	अव्ययीभाव समास
3. कमलनयन	कमल के समान नयन	कर्मधारय समास
4. आजन्म	जन्म से लेकर	अव्ययीभाव समास
5. लाभ-हानि	लाभ और हानि	द्वंद्वसमास

(ङ) 1. परस्पर संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं। संधि और समास में अंतर : वर्णों के मेल को संधि कहते हैं, जबकि शब्दों का संक्षेपीकरण समास कहलाता है। जैसे–

मुख्य + अध्यापक = मुख्याध्यापक (संधि)
तीन लोकों का समूह = त्रिलोक (समास)

2. **कर्मधारय समास और बहुव्रीहि समास में अंतर :**
कर्मधारय समास के दोनों पदों में 'विशेषण-विशेष्य' या 'उपमान-उपमेय' का संबंध होता है तथा दूसरा पद प्रधान होता है।
जैसे– पीतांबर = पीत हैं जो अंबर कमलनयन = कमल के समान नयन
बहुव्रीहि समास में दोनों पद मिलकर किसी तीसरे पद की प्रधानता व्यक्त करते हैं।
जैसे– पीतांबर = पीत हैं अंबर जिसके (विष्णु)
कमलनयन = कमल जैसे नयन हैं जिसके (श्रीकृष्ण)

3. **द्विगु समास और बहुव्रीहि समास में अंतर :** द्विगु समास में समस्त पद का पहला पद संख्यावाचक विशेषण है तथा दूसरा पद उसका विशेष्य, लेकिन बहुव्रीहि समास में दोनों ही पद (समस्त पद) विशेषण का काम करते हैं। जैसे–
त्रिनेत्र – तीन नेत्रों का समूह (द्विगु समास)
तीन नेत्र हैं जिसके अर्थात् शिव (बहुव्रीहि समास)
दशानन – दस आननों (मुखों) का समूह (द्विगु समास)
दस आनन (मुख) हैं जिसके अर्थात् रावण (बहुव्रीहि समास)

विविध

(क) 1. मंदिर के सामने चौराहा है।
2. जन्मांध व्यक्ति धनवान है।
3. रातोंरात में जलप्रवाह तेज हो गया है।
4. दुर्गा प्रतिमा को जलधारा में प्रवाहित किया गया है।
5. श्री कृष्ण को चक्रधर भी कहते हैं।

(ख)

1.	बैलगाड़ी	(संबंध तत्पुरूष समास)
2.	जन्मांध	(अपादान तत्पुरूष समास)
3.	शरणागत	(अधिकरण तत्पुरूष समास)
4.	ध्यानमग्न	(अधिकरण तत्पुरूष समास)
5.	चौमुख	(द्विगु समास)
6.	सुख प्राप्त	(कर्म तत्पुरूष)
7.	पंचतत्व	(द्विगु समास)
8.	नीलकंठ	(बहुव्रीही समास)
9.	प्रेम आतुर	(अधिकरण तत्पुरूष समास)
10.	पृथ्वी-आकाश	द्वंद्व समास

अध्याय-5 – उपसर्ग-प्रत्यय

(क) 1. (अ), 2. (ब), 3. (अ), 4. (अ), 5. (अ)।

(ख)

शब्द	**उपसर्ग**	**मूल शब्द**	**प्रत्यय**
1. अधूत	अ	धूत	–
2. अपमानित	अप	मान	इत
3. बुराई	–	बुरा	ई
4. लुटेरा	–	लूट	एरा
5. बलवान	–	बल	वान

(ग) 1. (स), 2. (ब), 3. (स), 4. (अ), 5. (स)।

(घ) स्वयं कीजिए।

(ङ)

शब्द	**मूल शब्द**	**प्रत्यय**
1. इकहरा	इक	हरा
2. मधुरिमा	मधुर	इमा
3. फैलाव	फैल	आव
4. ममत्व	मम	त्व
5. चूहादानी	चूहा	दानी

लिखित

(च) 1. संस्कृत में निम्न प्रकार के उपसर्गों का प्रयोग किया जाता है:

अति, अनं, अप, अव, उप, दुर्, निर्, प्र, वि, सु, अ, पुनः, आ, कु।

2. प्रत्यय के दो भेद हैं–1. कृत् प्रत्यय, 2. तद्धित प्रत्यय

विविध

(क) उपसर्ग और प्रत्यय का एक साथ प्रयोग :

उपसर्ग		मूल शब्द		प्रत्यय		शब्द
उप	+	कार	+	ई	=	उपकारी
बद	+	नीयत	+	ई	=	बदनीयती
ना	+	लायक	+	ई	=	नालायकी
नि	+	डर	+	ता	=	निडरता
तत्	+	काल	+	ईन	=	तत्कालीन
अनु	+	भव	+	ई	=	अनुभवी
बे	+	रोजगार	+	ई	=	बेरोजगारी
अ	+	समाज	+	इक	=	असामाजिक
परि	+	पूर्ण	+	ता	=	परिपूर्णता
स्व	+	अल्प	+	ता	=	स्वल्पता

(ख) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✓) 5. (✗)

अध्याय-6 – शब्द-विचार

(क) 1. (ब), 2. (द), 3. (स), 4. (ब), 5. (द)।

(ख) 1. विदेशज, 2. अक्षि, 3. एकार्थी शब्द, 4. विदेशज शब्द, 5. छह।

(ग) निम्नलिखित शब्दों के तद्भव रूप लिखिए–

1. पद – पाँव
2. कपाट – किवाड़
3. दंड – डंडा
4. दश – दस
5. पुत्र – पूत
6. रात्रि – रात

(घ) 1. **तद्भव शब्द–** संस्कृत भाषा के ऐसे शब्द जो कुछ रूप परिवर्तन करके हिंदी में प्रयोग किए जाते हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं। जैसे–भाई, चाँद, दूध, फूल, साँप आदि।

2. **समरूपी भिन्नार्थक शब्द–** जो शब्द सुनने में एक जैसे लगते हैं; परंतु उनका अर्थ अलग-अलग होता है, इनकी वर्तनी में भी सूक्ष्म अंतर होता है; इन्हें समरूपी भिन्नार्थक शब्द कहते हैं। जैसे–

   अपकार, उपकार – बुरा करना, भला करना

   निधन, निर्धन – मृत्यु, गरीब

3. **यौगिक शब्द–** जो शब्द दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बनते हैं तथा जिनको सार्थक खंडों में विभाजित किया जा सकता है, वे यौगिक शब्द कहलाते हैं। जैसे–नमकीन, सद्‌गुण, गुणवान, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, देशभक्ति, अनपढ़ आदि यौगिक शब्द उपसर्ग तथा प्रत्यय जोड़कर और संधि तथा समास द्‌वारा बनाए जाते हैं।

4. **विकारी**- वे शब्द जिनमें लिंग, वचन, काल एवं कारक आदि के कारण रूप परिवर्तन होता है, वे विकारी शब्द कहलाते हैं।

विविध

(क) छात्र स्वयं करें।

(ख) 1. संकर शब्द – मोटरगाड़ी, नीलामघर, वर्षगाँठ

2. देशज शब्द – खटिया, जूता, पगड़ी

3. विदेशज शब्द – लाश, कैंची, बंदूक

4. यौगिक शब्द – नमकीन, सद्‌गुण, गुणवान

5. योगरूढ़ शब्द – हिमालय, दशानन, नीलकंठ

अध्याय-7 – वर्तनी तथा वाक्य संबंधी अशुद्‌धि शोधन

(क) 1. क) कीरन ख) शिक्षित ग) पत्नी घ) ङ) घनिष्ठ

(ख) 1. दवाइयाँ 7. सामाजिक

2. ऋषि 8. चिह्न

3. सम्राज्ञी 9. पिंजरा

4. विज्ञान 10. पृथक

5. विशेषण 11. घनिष्ठ

6. बुद्धि 12. वनस्पति

(ग) (क) आज रात भर वर्षा होती रही।

(ख) वह तेज़ दौड़ता है।

(ग) उसके चक्षुओं से आँसु बहने लगे।

(घ) आखिर शत्रुओं ने हथियार रख दिए।

(ङ) मुझे अपनी पृथ्वी से बहुत प्यार है।

विविध

(क) 1. स्मरण 2. पाँचवा 3. टिप्पणी 4. निरीक्षण 5. आदर्श

अध्याय-8 – पर्यायवाची या समानार्थक शब्द

(क) 1. (अ), 2. (स), 3. (द), 4. (अ)।

(ख) 1. अतिथि, 2. दम, 3. भ्रमर, 4. नभ।

(ग) 1. (✓), 2. (✗), 3. (✓)।

(घ) 1. जंगल – वन

2. तालाब – सरोवर

3. आँख – नयन

4. इंद्र – देवराज

5. तीर – शर

(ङ) 1. पुष्प 2. शिशु 3. भवन 4. बाण 5. दुग्ध

विविध

अपने घर के आस-पास देखकर पाँच वस्तुओं के नाम लिखिए तथा तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए–

1. पेड़ - वृक्ष, पादप, विरप। 2. घोड़ा - अश्व, घोटक, तुरंग।
3. पत्ता - पर्ण, पात, दल। 4. आभूषण - अलंकार, गहना, भूषण।
5. घर - गृह, भवन, आलय।

अध्याय-9 – विलोम या विपरीतार्थक शब्द

(क) 1. (अ), 2. (स), 3. (ब), 4. (ब)।

(ख) 1. शुद्ध, 2. वीर, 3. आदर, 4. अभिशाप।

(ग) 1. (✓), 2. (✗), 3. (✗)।

(घ) 1. आज्ञा – प्रदान

2. आदान – रंक

3. अनुकूल – द्वेष

4. राजा – अवज्ञा

5. राग – प्रतिकूल

लिखित

1. विलोम का अर्थ होता है-विपरीत या उल्टा।
2. कृतज्ञ - कृतघ्न, संधि - विग्रह तथा स्वच्छ - अस्वच्छ।

विविध– स्वयं कीजिए।

अध्याय-10 – एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द

(क) 1. (ब), 2. (अ)।

(ख) 1. गर्व – अपनों को दूसरों से श्रेष्ठ समझने की भावना

गौरव – अपनी महानता का बोध।

2. उत्साह – काम करने की उमंग।

साहस – शक्ति या साधन न होने पर भी काम करना।

3. आज्ञा – पूज्य या महान् व्यक्तियों द्वारा छोटों को दिया गया दिशा-निर्देश।

अनुमति – किसी कार्य के लिए माँगी गई सहमति।

4. कुशल – जो अपनी क्षमताओं का प्रयोग भली-भाँति करना जानता हो।

निपुण – जो अपने विषय में पूरा ज्ञान प्राप्त कर चुका हो।

5. आधि – मानसिक कष्ट; जैसे–चिंता।

व्याधि – शारीरिक कष्ट; जैसे–ज्वर, खाँसी आदि।

6. नायिका – नाटक या उपन्यास की प्रधान पात्रा।

अभिनेत्री – अभिनय करने वाली स्त्री।

7. न्याय – सच और झूठ की पूरी छानबीन के बाद दिया गया फैसला।

निर्णय – विवाद का साधारण फैसला, भले ही वह ठीक हो या गलत।

(ग) 1. खेद, 2. आधि, 3. अनुसंधान, 4. अनुपम, 5. अनुकूल,
6. यंत्रणा, 7. ज्ञान, 8. पुत्र, 9. अमूल्य, बहुमूल्य।

(घ) 1. 'जलज' का अर्थ 'जल में उत्पन्न होने वाला' है। 'जलज' शब्द का प्रयोग कमल के फूल के लिए किया जाता है।

2. एक शब्द के सभी पर्यायवाची पूरी तरह से एक-दूसरे के पर्याय नहीं होते हैं। परस्पर पर्याय दिखने वाले दो शब्दों में भी सूक्ष्म-सा अंतर अवश्य होता है। इसलिए अर्थ की

दृष्टि से समान होते हुए भी पर्यायवाची हमेशा एक-दूसरे के स्थान पर प्रयोग नहीं हो सकते हैं। केवल कुछ ही पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग एक-दूसरे के स्थान पर हो सकता है; जैसे–

शब्द	पर्यायवाची शब्द	शब्द	पर्यायवाची शब्द
कमल	जलज	गर्व	अहंकार
सोना	कनक	बादल	नीरद

विविध– स्वयं कीजिए।

अध्याय-11 – अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

(क) 1. (ब), 2. (अ)।

(ख) 1. शताब्दी, 2. उपर्युक्त, 3. नश्वर, 4. अपव्ययी,
5. प्रत्यक्ष, 6. वार्षिक, 7. निर्दयी, 8. अमर।

(ग) 1. गणित का ज्ञान रखने वाला – गणितज्ञ
2. अत्याचार करने वाला – अत्याचारी
3. प्रतिदिन होने वाला – दैनिक
4. रात में घूमने वाला – निशाचर

(घ) 1. वाचाल, 2. वैष्णव, 3. हस्तलिखित, 4. समदर्शी, 5. जिज्ञासु।

(ङ) लेखन को संक्षिप्त तथा प्रभावशाली बनाने के लिए अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का प्रयोग किया जाता है।

विविध

अनुकरणीय	–	जो अनुकरण करने योग्य हो।
अजेय	–	जिसे जीता न जा सके।
अनादि	–	जिसका आदि (अंत) न हो।
जिज्ञासु	–	जिसमें जानने की इच्छा हो।
प्रत्यक्ष	–	जो आँखों के सामने हो।

अध्याय-12 – श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

(क) 1. (अ) , 2. (ब), 3. (ब), 4. (ब)।

(ख) 1. अलि – भौंरा – फूल पर अलि मँडरा रहा है।
अली – सखा – मेरा अली मुझसे बहुत स्नेह करता है।
2. अर्ध – आधा – गिलास में अर्ध ऊँचाई तक पानी भरा है।

अर्ध्य – पूजा की सामग्री – मंदिर में अर्ध्य पाकर मैं धन्य हो गया।

3. दिन – दिवस – आज दिन कौन-सा है।

दीन – दरिद्र – सुदामा बहुत दीन है।

4. सर्ग – सृष्टि – यह सर्ग भगवान का स्वर्ग है।

स्वर्ग – देवलोक – कश्मीर धरती का स्वर्ग है।

5. प्रमाण – सबूत – तुम्हारे पास मेरी चोरी का क्या प्रमाण है।

प्रणाम – नमस्कार – मैं रोज अपने बड़ों को प्रणाम करता हूँ।

6. कोष – खजाना – राजकोष में कुछ भी शेष नहीं बचा।

कोश – शब्द-भंडार – यह हिन्दी से इंगलिश का शब्द-कोश है।

7. धेनु – गाय – धेनु हमें दूध देती है।

धनु – धनुष – राम ने धनु से तीर चलाया।

8. प्रसाद – मंदिर में बाँटा जाने वाला – मंदिर में पुजारी जी प्रसाद बाँट रहे थे।

प्रासाद – महल – यह प्रासाद बहुत सुंदर व अद्‌भुत है।

(ग) 1. निधन, 2. अपेक्षा, 3. ओर, 4. कृपण, 5. खान, 6. सूत, 7. दिन, 8. भित्ति, 9. काठ, काट, 10. कीला।

(ङ) 1. ऐसे शब्द जो पढ़ने या सुनने में तो समान लगते हैं, परंतु उनके अर्थ भिन्न होते हैं, वे श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं।

2. श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों का अर्थ समान नहीं होता है।

विविध

1.	भवन	घर	2.	अवधि	समय
	भुवन	संसार		अवधि	प्रांत की भाषा
3.	उपयुक्त	उचित	4.	अदृश्य	आँखों से ओझल
	उपर्युक्त	ऊपर कहा गया		अदृष्टभाग्य	
5.	नीर	पानी	6.	अंश	भाग, अवयव
	नीड़	घोंसला		अंस	कंधा
7.	कुल	वंश, योग	8.	अम्ल	खट्टा
	कूल	किनारा		अमलनशा, पालन	
9.	द्रव	तरल पदार्थ	10.	आदि	आरंभ, अन्य
	द्रव्य	धन		आदी	अभ्यस्त।

अध्याय-13 – संज्ञा

(क) 1. (ब), 2. (स), 3. (अ), 4. (स)।

(ख) 1. मिठास, 2. बर्तन, 3. अहंकार, 4. वीरता।

(ग)

1. व्यक्ति	–	व्यक्तित्व	5. लड़का	–	लड़कपन
2. राष्ट्र	–	राष्ट्रीयता	6. ईमान	–	ईमानदारी
3. हिंदू	–	हिंदुत्व	7. पुरुष	–	पुरुषत्व
4. प्रभु	–	प्रभुत्व	8. युवक	–	यौवन

(घ) 1. (✓), 2. (✓), 3. (✗), 4. (✗)।

(ङ) 1. व्यक्तिवाचक संज्ञा – हरिद्वार, प्रेमचंद, रामायण, विराट कोहली, दिल्ली।

जातिवाचक संज्ञा – कबूतर, मनुष्य, नेता, युवक, प्राचार्य

भाववाचक संज्ञा – बचपन, शत्रुता, वीरता, क्रोध, लालिमा।

2. गुरु - गुरुत्व, शत्रु - शत्रुता, आदमी - आदमियत,
दोस्त - दोस्ती, तपस्वी - तपस्या।

3. समूहवाचक संज्ञा–वर्ग-विशेष के समूह का बोध कराने वाले संज्ञा शब्दों को समूहवाचक संज्ञा कहते हैं।

विविध– स्वयं कीजिए।

अध्याय-14 – लिंग

(क) 1. (ब), 2. (अ), 3. (ब), 4. (ब)।

(ख) 1. पुल्लिंग, 2. स्त्रीलिंग, 3. स्त्रीलिंग, 4. पुल्लिंग।

(ग) 1. (✗), 2. (✓), 3. (✗), 4. (✗)।

(घ)

1. नेता	–	नेत्री	5. लड़का	–	लड़की
2. स्वामी	–	स्वामिनी	6. बूढ़ा	–	बुढ़िया
3. वृद्ध	–	वृद्धा	7. भील	–	भीलनी
4. छात्र	–	छात्रा	8. मालिक	–	मालकिन

(ङ) 1. **पुल्लिंग–** संज्ञा शब्द के जिस रूप से पुरुष जाति का बोध हो, उसे पुल्लिंग कहते हैं। जैसे–बहन, पिता, भाई, बकरा, लड़का, अध्यापक, बंदर, नौकर, मुरगा आदि।

स्त्रीलिंग– संज्ञा शब्द के जिस रूप से स्त्री जाति का बोध हो, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं। जैसे–माता, औरत, भाभी, अध्यापिका, नौकरानी, वधू एवं बहन आदि।

2. मछली, तितली, छिपकली, गिलहरी, मक्खी।

विविध

(क) स्वयं करें।

(ख)

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
पति	पत्नी	पिता	माता
भाई	बहन	वर	वधू
ससुर	सास	पुरुष	स्त्री
राजा	रानी	सम्राट	सम्राज्ञी
युवक	युवती	बिलाव	बिल्ली

अध्याय-15 – वचन

(क) 1. (अ), 2. (अ), 3. (अ)।

(ख) 1. चूहे, 2. खिड़कियाँ, 3. चीजें, 4. बेटे, 5. मिठाइयाँ।

(ग) 1. पंखा – एकवचन, 5. साड़ी – एकवचन
2. लड़का – एकवचन, 6. धातु – एकवचन
3. नदी – एकवचन, 7. गाड़ी – एकवचन।
4. माला – एकवचन,

(घ) 1. (✓), 2. (✗), 3. (✓), 4. (✗)।

(ङ) 1. सदैव बहुवचन में प्रयुक्त पाँच शब्द–हस्ताक्षर, प्राण, बाल, होश, दर्शन।

2. शब्द के जिस रूप से किसी प्राणी, वस्तु या पदार्थ के एक या अनेक होने का पता चले, उसे वचन कहते हैं।

विविध

(क) 1. बच्चा विद्यालय जाता है।

2. मैं काम कर रहा हूँ।

3. भारत अपनी प्राचीन कथाओं के कारण प्रसिद्ध है।

(ख) स्वयं करें।

अध्याय-16 – कारक

(क) 1. (स), 2. (ब), 3. (स), 4. (संबंधकारक), 5. (अ)।

(ख) 1. के द्वारा, 2. पर, 3. के लिए, 4. पर, 5. का।

(ग)	**वाक्य**	**कारक**
	1. सुमन गाड़ी से आई है।	करण
	2. नेहा पेन से लिख रही है।	करण
	3. वह सब्जी से रोटी खा रहा है।	करण
	4. मनोज लखनऊ से आया है।	अपादान
	5. गंगा हिमालय से निकलती है।	अपादान
(घ)	1. भिखारी को रोटी दो।	संप्रदान कारक
	2. हे प्रभु! सबका कल्याण करो।	संबोधन कारक
	3. राम ने रमन को पुस्तक दी।	कर्ता कारक
	4. नेताजी ने भाषण दिया।	कर्ता कारक
	5. वह हवाई जहाज से दिल्ली गया।	करण कारक

(ङ) 1. अपादान कारक–संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप जिसके द्वारा अलग होने, शर्माने, डरने, तुलना या सीखने का बोध होता है, वह अपादान कारक कहलाता है।

2. संबंध कारक–संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किन्हीं दो वस्तुओं या व्यक्तियों के परस्पर संबंध का पता चलता है, उन्हें संबंध कारक कहते हैं।

3. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया तथा वाक्य के अन्य शब्दों के संबंध का पता चलता है, उसे कारक कहते हैं।

4. कर्म कारक–वाक्यों में जिस संज्ञा या सर्वनाम पद पर क्रिया के कार्य का फल जिस पर पड़ता है, वह कर्म कारक कहलाता है।

5. अधिकरण कारक–संज्ञा के जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध हो, उसे अधिकरण कारक कहते हैं।

विविध

कारक के भेद	विभक्ति चिह्न	प्रभाव	वाक्य
कर्ता	ने	क्रिया को करने वाला।	सुमित ने पाठ पढ़ा।
कर्म	को	जिस पर क्रिया का फल पड़े।	भिखारी को भोजन दो।
करण	से/के द्वारा	वह साधन जिससे क्रिया होती है।	पिताजी कार से आए।

कारक के भेद	विभक्ति चिह्न	प्रभाव	वाक्य
संप्रदान	के लिए, को	जिसके लिए कार्य हो।	वह मेरे भाई के लिए फल लाए।
अपादान	से, अलग होना	जिससे अलग होने का भाव प्रकट हो।	पेड़ से पत्ता गिरा।
संबंध	का, के, की, रा, रे, री, ना, ने, नी	संबंध प्रकट करने के लिए।	सोनू की कार सुंदर है।
अधिकरण	में, पर	क्रिया करने का स्थान।	रमेश कमरे में बैठा है।
संबोधन	हे, अरे आदि	संबोधित किया जाना।	हे भगवान! सभी की रक्षा करो।

अध्याय-17 – सर्वनाम

(क) 1. (अ), 2. (द), 3. (स)।

(ख) 1. हम, 2. तुम्हें, 3. कहाँ, 4. वे, 5. यहाँ।

(ग) 1. आप – पुरुषवाचक सर्वनाम
2. क्या – प्रश्नवाचक सर्वनाम
3. तुम – पुरुषवाचक सर्वनाम
4. वह – निश्चयवाचक सर्वनाम
5. स्वयं – निजवाचक सर्वनाम

(घ) 1. (✗), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✗)।

(ङ) इनके उत्तर लिखिए-

1. **निश्चयवाचक सर्वनाम**–जो सर्वनाम शब्द किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु की ओर (समीप या दूर) संकेत करे, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे–
   यह सोनिया का घर है। वह प्राथमिक पाठशाला में पढ़ता है।
   उपर्युक्त वाक्यों में यह और वह शब्द निश्चितता का बोध करा रहे हैं, अतः ये निश्चयवाचक सर्वनाम हैं।
   अनिश्चयवाचक सर्वनाम–वे सर्वनाम शब्द जो किसी निश्चित वस्तु अथवा व्यक्ति का बोध नहीं कराते हैं, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे–
   दूध में कुछ गिर पड़ा है। कोई गा रहा है।
2. **पुरुषवाचक सर्वनाम**–जो सर्वनाम शब्द कहने वाले, बोलने वाले, श्रोता या सुनने वाले या जिसके विषय में बात की जा रही हो उनका बोध कराते हैं, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।
3. **निजवाचक सर्वनाम**–वे सर्वनाम शब्द जिनका प्रयोग कर्ता के साथ अपनापन (निजत्व) बताने के लिए आता है, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं।

4. **प्रश्नवाचक सर्वनाम**–जिन सर्वनामों का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।
5. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम**–वे सर्वनाम शब्द जो किसी निश्चित वस्तु अथवा व्यक्ति का बोध नहीं कराते हैं, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

विविध - स्वयं कीजिए।

अध्याय-18 – विशेषण

(क) 1. (स), 2. (अ), 3. (ब), 4. (स), 5. (ब)।

(ख) 1. बीस, 2. बड़ा, 3. ईमानदार, 4. दो किलो, 5. सुंदर।

(ग) 1. (✗), 2. (✓), 3. (✗), 4. (✓), 5. (✗)।

(घ) निम्नलिखित वाक्यों में से विशेषण एवं विशेष्य शब्द छाँटकर लिखिए–

वाक्य	विशेषण	विशेष्य
1. मेरा बेटा परिश्रमी है।	मेरा	बेटा
2. थोड़ी चाय पी लीजिए।	थोड़ी	चाय
3. वे अध्यापक आ रहे हैं।	वे	अध्यापक
4. बाज़ार से ताज़ी सब्ज़ियाँ लाओ।	ताज़ी	सब्ज़ियाँ
5. वह सफेद गाय बैठी है।	सफेद	गाय

(ङ) 1. गुणवाचक विशेषण – चतुर
2. सार्वनामिक विशेषण – यह
3. परिमाणवाचक विशेषण – दो लीटर
4. संख्यावाचक विशेषण – चार
5. गुणवाचक विशेषण – चालाक

(च) 1. साँप – सपेरा 2. अपमान – अपमानित
3. भूत – भौतिक 4. लोभ – लोभी
5. पीड़ा – पीड़ित 6. घटना – घटित
7. तैरना – तैराक 8. भागना – भगोड़ा
9. दुलार – दुलारा 10. रोग – रोगी

(छ) इनके उत्तर लिखिए–

1. **सार्वनामिक विशेषण**–जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग संज्ञा के आगे उसके विशेषण के रूप में होता है, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

2. **सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषण में अंतर**- संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं, जबकि संज्ञा से पहले लगकर उसकी विशेषता बताने वाले सर्वनाम, सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं। जैसे–

सर्वनाम	**सार्वनामिक विशेषण**
वह रो रहा है।	वह बालक रो रहा है।
यह हमारा मकान है।	यह मकान हमारा है।

विविध

(क) कुछ, थोड़ा, बहुत आदि शब्द ऐसे हैं जो संख्यावाचक विशेषण व परिमाणवाचक विशेषण दोनों के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

(ख) स्वयं करें।

अध्याय-19 – क्रिया

(क) 1. (ब), 2. (अ), 3. (स), 4. (ब), 5. (ब)।

(ख) 1. सकर्मक, 2. सकर्मक, 3. सकर्मक, 4. अकर्मक, 5. सकर्मक।

(ग) 1. होगी, 2. खाकर, 3. पढ़ता, 4. जाग, 5. करना पड़ेगा।

(घ)
1. प्रेरणार्थक क्रिया – पढ़वाना
2. नामधातु क्रिया – फिल्माना
3. पूर्वकालिक क्रिया – पकाकर
4. सामान्य क्रिया – गाया
5. संयुक्त क्रिया – खा रही है।

(ङ) 1. (✓), 2. (✓), 3. (✗), 4. (✓), 5. (✗)।

(च) 1. धातु के चार भेद होते हैं–

(अ) सामान्य धातु (ब) व्युत्पन्न धातु (स) नामधातु (द) मिश्रधातु।

2. **नामधातु–** संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण शब्दों के अंत में प्रत्यय लगाकर जो क्रिया बनती हैं, उन्हें नामधातु क्रिया कहते हैं।

3. (अ) **सामान्य क्रिया–** जब वाक्य में एक ही क्रिया पद का प्रयोग किया जाए, तब वह सामान्य क्रिया कहलाती है।

(ब) **संयुक्त क्रिया–** दो या दो से अधिक क्रियाओं से मिलकर बनी क्रियाएँ संयुक्त क्रिया है।

4. **सकर्मक क्रिया–** 'सकर्मक' का शाब्दिक अर्थ है–कर्म के साथ। वे क्रियाएँ जिनमें कर्म पाया जाता है, सकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं। इन क्रियाओं का सीधा प्रभाव कर्म पर पड़ता है। अतः हम कह सकते हैं कि जिन क्रियाओं में कर्म की अपेक्षा होती है, वे सकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं।

5. **एककर्मक क्रिया**–जिन क्रियाओं में एक कर्म प्रयुक्त होता है, वे एककर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं।

विविध

(क) सकर्मक क्रिया के भेद–

सकर्मक क्रिया के दो भेद होते हैं– (अ) एककर्मक (ब) द्विकर्मक

(अ) **एककर्मक क्रिया**–जिन क्रियाओं में एक कर्म प्रयुक्त होता है, वे एककर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं।

जैसे–	राम	स्कूल	जाता है।
	↓	↓	↓
	कर्ता	कर्म	क्रिया
	सुमित्रा	खाना	पका रही है।
	↓	↓	↓
	कर्ता	कर्म	क्रिया

उपर्युक्त वाक्यों से स्पष्ट है कि यहाँ क्रिया के साथ एक कर्म आया है। अत: ये क्रियाएँ एककर्मक क्रियाएँ हैं।

(ब) **द्विकर्मक क्रिया**–जिन क्रियाओं में दो कर्म प्रयुक्त होते हैं, वे द्विकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं। जैसे–

अध्यापक ने	छात्रों को	कहानी	सुनाई।
↓	↓	↓	↓
कर्ता	कर्म	कर्म	क्रिया
राजा ने	गरीबों को	खाना	खिलाया।
↓	↓	↓	↓
कर्ता	कर्म	कर्म	क्रिया

उपर्युक्त वाक्यों में स्पष्ट है कि क्रियाएँ दो-दो कर्मों के साथ प्रयुक्त हुई हैं। अत: ये द्विकर्मक क्रियाएँ हैं।

(ख) स्वयं करें।

अध्याय-20 – काल

(क) 1. (स), 2. (द), 3. (ब), 4. (ब), 5. (स)।

(ख) 1. रहा, 2. जाएगा, 3. पढ़ेगा, 4. करेगी, 5. धोता।

(ग) 1. (✗), 2. (✓), 3. (✗), 4. (✗), 5. (✗)।

(घ) 1. भूतकाल, 2. वर्तमानकाल, 3. भविष्यत्काल, 4. वर्तमानकाल, 5. भविष्यत्काल

(ङ) इनके उत्तर लिखिए–

1. काल के तीन भेद होते हैं– (अ) वर्तमान काल, (ब) भूतकाल एवं (स) भविष्यत् काल।
2. सामान्य वर्तमान काल– क्रिया के जिस रूप से वर्तमान काल में सामान्य रूप से घटित होने का पता चले, तो उसे सामान्य वर्तमान काल कहते हैं।
3. पूर्ण भूतकाल–क्रिया के जिस रूप में उसके बहुत पहले पूर्ण हो जाने का पता चलता है, उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं।

विविध

(क) सामान्य भूतकाल-सुरेश ने खाना खाया।, पूर्ण भूतकाल-मैं दिल्ली गया था।, अपूर्ण भूतकाल-बरसात हो रही थी।, आसन्न भूतकाल-विद्यार्थियों ने पाठ याद कर लिया है।, संदिग्ध भूतकाल-बस छूट गई होगी।, हेतु-हेतुमद् भूतकाल- यदि मैं परिश्रम करता, तो उत्तीर्ण हो जाता।

(ख) 1. कैलास पढ़ रहा है।

2. मैं खाना खा रही हूँ।

3. पिताजी दफ़्तर का काम कर रहे है।

अध्याय-21 – अविकारी शब्द (अव्यय)

(क) 1. (ब), 2. (अ), 3. (ब), 4. (ब), 5. (द)।

(ख) अव्यय शब्दों को रेखांकित करके उनका भेद लिखिए–

1. मैंने आज तक करेला नहीं खाया।	कालवाचक क्रियाविशेषण
2. सभी जानते हैं कि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है।	समुच्चयबोधक
3. अरे! तुमने तो कमाल ही कर दिया।	विस्मयादिबोधक
4. चुटकुला सुनकर मैं खूब हँसा।	परिमाणवाचक-क्रिया विशेषण
5. मैं कल तुम्हारे घर गया था।	कालवाचक क्रिया-विशेषण

(ग) निम्नलिखित अविकारी शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

1. इसलिए = उसके पास पैसे नहीं थे इसलिए वह मेला देखने नहीं गया।
2. अथवा = शांत बैठो अथवा यहाँ मत रहो।
3. तथापि = यद्यपि वह बहुत खेला, तथापि वह मैंच नहीं जीत सका।

4. एकाएक = एकाएक गाड़ी घर के सामने आकर रूकी।

5. धन्य = भगवान के दर्शन करके हम धन्य हो गए।

(घ) 1. (✗), 2. (✓), 3. (✗), 4. (✗)।

(ङ) 1. बाप रे बाप!, 2. बहुत तेज, 3. भी, 4. करने पर भी, 5. के अंदर।

(च) इनके उत्तर लिखिए–

1. **संबंधबोधक अव्यय तथा स्थानवाचक क्रिया-विशेषण में अंतर**
   संबंधबोधक अव्यय 'के, से, की' आदि के साथ प्रयुक्त होते हैं और स्थानवाचक क्रिया-विशेषण इनके बिना।
   संबंधबोधक अव्यय संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ आते हैं, परंतु स्थानवाचक क्रिया-विशेषण क्रिया के साथ प्रयुक्त होते हैं। जैसे–
   सामने देखो। स्थानवाचक क्रिया-विशेषण
   घर के सामने गाड़ी खड़ी है। संबंधबोधक अव्यय
   रीना बाहर खड़ी है। स्थानवाचक क्रिया-विशेषण
   घर के बाहर रीना खड़ी है। संबंधबोधक अव्यय
2. **विस्मयादिबोधक–**जो शब्द हर्ष, शोक, भय, घृणा तथा विस्मय आदि भावों का बोध कराते हैं, उन्हें विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं।
3. वे शब्द जिनमें लिंग, वचन और काल की दृष्टि से कोई रूप परिवर्तन नहीं होता, उन्हें अव्यय शब्द या अविकारी शब्द कहते हैं।

विविध– स्वयं करें।

अध्याय-22 – पद-परिचय

(क) 1. (ब), 2. (अ), 3. (स), 4. (ब), 5. (ब)।

(ख) निम्नलिखित रंगीन पदों का परिचय दीजिए–

1. मैं आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। **मैं** – उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ता कारक, पढ़ती हूँ' क्रिया की कर्ता।
2. वह पानी **पीता** है।
   पीता – सकर्मक क्रिया, एकवचन, पुल्लिंग वर्तमान काल, 'वह' कर्ता।
3. **सूरदास** भक्त कवि थे।
   सूरदास - व्यक्तिवाचक, एकवचन, पुल्लिंग कर्ता, भूतकाल।
4. सोनिया बहुत तेज दौड़ती है। **बहुत तेज** - रीतिवाचक क्रिया-विशेषण, बोलती है, क्रिया की विशेषता।
5. दादी जी **रामायण** पढ़ रही हैं।
   रामायण - व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, कर्मकारक, 'पढ़ रही हैं' क्रिया का कर्म।

(ग) निम्नलिखित वाक्यों का पद-परिचय दीजिए–

1. सोनिया गीत गाती है।

   सोनिया – व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्ताकारक, 'गीत गाती है' क्रिया की कर्ता।

   गीत – जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिग, कर्मकारक, 'गाती है क्रिया का कर्म'।

   गाती – सकर्मक क्रिया, स्त्रीलिंग, एकवचन, वर्तमानकाल, 'सोनिया' कर्ता।

   है – सहायक क्रिया, एकवचन।

2. मेरा मित्र अच्छा धावक है।

   मेरा – सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिंग।

   मित्र – जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग।

   अच्छा – गुणवाचक जाति विशेषण, एकवचन, पुल्लिंग।

   धावक – जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग।

   है – सहायक क्रिया एकवचन।

3. सोनिया अचानक गिर गई थी।

   सोनिया – व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिग।

   अचानक – रीतिवाचक क्रिया विशेषण, 'गिर गई थी' क्रिया की विशेषता।

   गिर गई थी – अकर्मक क्रिया, स्त्रीलिंग, एकवचन, भूतकाल, सोनिया कर्ता।

4. ये अध्यापक आ रहे हैं।

   ये – सर्वनाम, पुल्लिंग, बहुवचन।

   अध्यापक – जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, कर्ता कारक, 'आ रहे हैं' क्रिया के कर्ता।

   आ रहे हैं। – अकर्मक क्रिया, पुल्लिंग, बहुवचन, वर्तमानकाल।

5. वह दिल्ली चली गई।

   वह – अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ता कारक, 'चली गई' क्रिया की कर्ता।

   दिल्ली – व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन।

   चली गई – सकर्मक क्रिया, एकवचन, स्त्रीलिंग, भूतकाल, 'वह' कर्ता।

(घ) इनके उत्तर लिखिए–

1. वाक्य में प्रयुक्त पदों का व्याकरण की दृष्टि से परिचय देना, पद-परिचय कहलाता है।
2. वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं, जबकि वाक्य में प्रयुक्त शब्द पद कहलाता है। शब्द स्वतंत्र होता है, जबकि पद व्याकरणिक इकाई में बँधा होता है।

विविध

विशेषण पद का परिचय

सफेद गाय दौड़ रही है।

सफेद– गुणवाचक विशेषण, स्त्रीलिंग, एकवचन, 'गाय' विशेष्य की विशेषता।

मेरे पास पाँच कमीजें हैं।

पाँच– संख्यावाचक विशेषण, स्त्रीलिंग, बहुवचन, 'कमीज' विशेष्य की विशेषता।

क्रिया–विशेषण पद का परिचय

आरती धीरे-धीरे चलती है।

धीरे-धीरे- रीतिवाचक क्रिया-विशेषण, 'चलती है' क्रिया की विशेषता।

माता जी भीतर बैठी हैं।

भीतर- स्थानवाचक क्रिया-विशेषण, 'बैठी हैं' क्रिया की विशेषता।

अध्याय-23 – वाक्य-विचार

(क) 1. (स), 2. (ब), 3. (स), 4. (ब)।

(ख) 1. (✗), 2. (✗), 3. (✗), 4. (✓)।

(ग) इनके उत्तर लिखिए-

1. **मिश्रित वाक्य–** जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य है तथा एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्य हों, वह मिश्रित वाक्य कहलाता है।
2. वाक्य के दो अंग होते हैं–उद्देश्य एवं विधेय।
3. **प्रश्नवाचक वाक्य–**जिस वाक्य में किसी प्रकार के प्रश्न पूछने का बोध होता है, उसे प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं।
4. वाक्य के पाँच गुणों के नाम निम्नलिखित हैं–1. पदक्रम, 2. निकटता, 3. योग्यता, 4. आकांक्षा एवं 5. अन्वय।

विविध– स्वयं करें

अध्याय-24 – विराम-चिह्न

(क) 1. (स), 2. (अ), 3. (ब), 4. (अ)।

(ख) सही मिलान कीजिए–

1. अल्प विराम	–	(,)
2. विस्मयादिबोधक चिह्न	–	(!)
3. कोष्ठक	–	( )
4. उद्धरण चिह्न	–	(“ ”)
5. विवरण चिह्न	–	(:-)

(ग) 1. (:-) – विवरण चिह्न

2. (,) – अल्प विराम

3. (;) – अर्ध विराम

4. (।) – पूर्ण विराम

5. (-) – योजक चिह्न

(घ) नीचे लिखे वाक्यों में उचित विराम-चिह्नों का प्रयोग कीजिए–

1. क्या ये आपके भाई हैं?

2. हमारे देश में गंगा, यमुना, सरस्वती और गोदावरी नदियाँ हैं।

3. अरे! तुम क्या कर रहे हो?

4. अरे! तुम कब आए? यदि तुम न आते, तो मैं परेशान हो जाता।

5. चाँद-सा चेहरा देखकर, मन खुश हो जाता है।

(ङ) इनके उत्तर लिखिए–

1. **अर्ध विराम (;)**–वाक्य के मध्य में एक बात पूरी हो जाने पर जहाँ थोड़ा रुकना पड़े, वहाँ अर्ध विराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है।
   जैसे– विद्या धन अनमोल है; खर्च करने से बढ़ता है।
   परिश्रम जीवन है; आलस्य मृत्यु।
   अल्प विराम (,)–अल्प का अर्थ है–थोड़ा। अल्प विराम का अर्थ हुआ–थोड़ा विश्राम। बातचीत करते समय जब हम बहुत-सी वस्तुओं का वर्णन एक साथ करते हैं, तो उनके बीच में अल्प विराम का प्रयोग करते हैं। जैसे–1. हरियाणा में गेहूँ, जौ, चना, बाजरा, चावल आदि फसलें उगाई जाती हैं। 2. सुनीता, कमलेश, बबीता और सविता कल आएँगी।
2. **हंस पद चिह्न (^)**–लिखते समय किसी शब्द के छूट जाने की स्थिति में संबंधित शब्द के स्थान पर हंस पद चिह्न का प्रयोग किया जाता है।
   जैसे– 1. अनिता ने कल ^(व्रत) रखा। 2. मेरे सभी उत्तर ^(ठीक) हैं।

विविध–स्वयं कीजिए।

अध्याय-25 – वाच्य

(क) 1. (ब), 2. (अ), 3. (अ), 4. (स), 5. (स)।

(ख) 1. (✓), 2. (✓), 3. (✗), 4. (✗)।

(ग) निम्नलिखित वाक्यों में उचित वाक्य भेद बताइए–

1. मैं चुप नहीं बैठ सकता। - कर्तृवाच्य

2. धोबिन कपड़े धोती है। - कर्तृवाच्य

3. मुझसे बैठा नहीं जाता। – भाववाच्य

(घ) निम्नलिखित कर्तृवाच्यों को कर्मवाच्यों में बदलिए–

1. माँ बाजार गई। – माँ द्वारा बाजार जाया गया।
2. सोनू साइकिल चला रहा है। – सोनू द्वारा साइकिल चलाई जा रही है।
3. वह सुबह से खेल रहा है। – उसके द्वारा सुबह से खेला जा रहा है।

(ङ) निम्नलिखित कर्तृवाच्यों को भाववाच्यों में बदलिए–

1. बच्चा हँस रहा है। – बच्चे से हँसा जा रहा है।
2. रामू खेल नहीं सकता। – रामू से खेला नहीं जाता।
3. शेर दहाड़ता है। – शेर से दहाड़ा जाता है।

(च) निम्नलिखित कर्मवाच्यों को कर्तृवाच्यों में बदलिए–

1. अध्यापक द्वारा समझाया जा रहा है। – अध्यापक समझा रहा है।
2. लड़कों द्वारा सेब खाए गए। – लड़कों ने सेब खाए।
3. दादी जी द्वारा अखबार पढ़ा जाता है। – दादी जी अखबार पढ़ती हैं।

(छ) इनके उत्तर लिखिए–

1. **भाववाच्य**–जिस वाक्य की क्रिया का संबंध कर्ता और कर्म से न होकर भाव से होता है, उसे भाववाच्य कहते हैं।
2. **कर्मवाच्य**–जहाँ क्रिया का संबंध सीधा कर्म से हो और क्रिया का लिंग एवं वचन कर्म के अनुसार हो, उसे कर्मवाच्य कहते हैं।
3. **कर्तृवाच्य**–जहाँ क्रिया का संबंध सीधे कर्ता से हो तथा क्रिया का लिंग एवं वचन कर्ता के अनुसार हो, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं।
4. वाच्य के तीन भेद होते हैं–1. कर्तृवाच्य, 2. कर्मवाच्य एवं 3. भाववाच्य।

विविध

भाभी जी खाना बना रही है।, राधिका द्वारा आइसक्रीम खाई जाती है।, सुरेश से सोया नही जाता।

अध्याय-26 – अलंकार

(क) 1. (क), 2. (क), 3. (ग), 4. (ख)

(ख) 1. अतिशयोक्ति अलंकार 2. श्लेष अलंकार
2. यमक अलंकार 4. रूपक अलंकार
5. अतिशयोक्ति अलंकार

(ग) इनके उत्तर लिखिए–

1. काव्य की शोभा बढ़ाने वाले शब्दों को अलंकार कहा जाता है।
   इसके दो भेद है:- (क) शब्दालंकार (ख) अर्थालंकार
2. जब शब्दों के स्तर पर सौंदर्य या चमत्कार उत्पन्न होता है, तो वहाँ 'शब्दालंकार' होता है। उदाहरण –
   'पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा पंडित भया न कोय' पंक्ति में 'प' वर्ण की आवृत्ति से सौंदर्य उत्पन्न हुआ है।
3. जब अर्थ के स्तर पर सौंदर्य उत्पन्न होता है, तो वहाँ 'अर्थालंकार' होता है।
   उदाहरण – 'मैया मैं तो चंद्र खिलौना लैं हों'
4. जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना की जाए, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

विविध– छात्र स्वयं करें।

अध्याय-27 – मुहावरे और लोकोक्तियाँ

(क) 1. (अ), 2. (स), 3. (स), 4. (ब)।

(ख) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए–

1. चार चाँद लगाना – शान बढ़ाना
2. चकमा देना – धोखा देना
3. गागर में सागर – थोड़े शब्दों में अधिक बात कहना।
4. घोड़े बेचकर सोना – निश्चिंत होकर सोना।

(ग) निम्नलिखित मुहावरों का उनके अर्थ के साथ सही मिलान कीजिए–

1. गुड़ गोबर करना – बना बनाया काम बिगाड़ देना
2. अपनी खिचड़ी अलग पकाना – सबसे अलग रहना
3. अगर-मगर करना – टाल-मटोल करना
4. काम आना – मारा जाना

(घ) निम्नलिखित लोकोक्तियों के अर्थ लिखिए–

1. अक्ल बड़ी या भैंस – काम बुद्धि से होता है ताकत से नहीं।
2. अंधों में काना राजा – मूर्खों में थोड़ा ज्ञानी।
3. आटे के साथ घुन भी पिसता है – बड़े के साथ छोटे को भी हानि पहुँच जाती है।
4. आप मरे जग परलै – जब आप मरे तो चिंता कैसी।

(ङ) निम्नलिखित लोकोक्तियों को पूरा कीजिए–

1. उल्टे बाँस बरेली को
2. आँख का अंधा नाम नैनसुख
3. अंत भला सो भला
4. अधजल गगरी छलकत जाय।

(च) इनके उत्तर लिखिए–

1. 'मुहावरा' शब्द अरबी भाषा के 'मुहावर' शब्द का परिवर्तित रूप है। जो वाक्यांश अपने साधारण अर्थ को छोड़कर विशेष अर्थ को व्यक्त करे उसे मुहावरा कहते हैं।
2. 'लोकोक्ति' का अर्थ है–'लोक (जनता) में प्रचलित उक्ति'। लोक-अनुभव से निर्मित, लोक में प्रचलित उक्ति को लोकोक्ति कहते हैं।

विविध

(क) मुहावरा वाक्य-खंड होता है, जबकि लोकोक्ति पूर्ण वाक्य होती है। 2. मुहावरा वाक्य के बीच में प्रयोग किया जाता है, अतः वाक्य का अंग बन जाता है। लो. कोक्ति वाक्य का अंग नहीं होती, उसका प्रयोग स्वतंत्र रूप से वाक्य के अंत में उदाहरणस्वरूप किया जाता है। 3. पूर्ण इकाई होने के कारण लोकोक्ति के स्वरूप में परिवर्तन नहीं किया जा सकता, जबकि मुहावरे के शब्द वाक्य के अनुसार परिवर्तनीय होते हैं।

(ख) स्वयं करें।

अध्याय-28 – अपठित गद्यांश

(क) गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. गद्यांश का उपर्युक्त शीर्षक है 'बालिका'।
2. बालिका के जन्म पर घर भर में उदासी इसलिए छा जाती है क्योंकि अनेक भारतीय परिवारों में लड़की व लड़के में समानता में कमी होती। लड़की के जन्म को अशुभ माना जाता है।
3. बालक के जन्म पर परिवार के हर सदस्य की आँखों में चमक आ जाती है, हृदय प्रसन्नता से सराबोर हो जाता है। महिलाएँ जच्चा-बच्चा गीत गाती हैं, नाचती हैं।
4. लिंग-समानता से तात्पर्य यह है कि लड़के व लड़की का लालन–पालन एक समान होना चाहिए। उनके बीच में कोई भेद-भाव नहीं होना चाहिए। जिस प्रकार लड़कों के लालन-पालन, पढ़ाई-लिखाई का ध्यान रखा जाता है। उसी प्रकार लड़कियों का ध्यान भी रखा जाना चाहिए।
5. बालक-बालिका का परिवार में पालन-पोषण समान प्रकार होना चाहिए।

(ख) 1. (ब), 2. (द), 3. (द), 4. (अ)।

(ग) गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. हमें स्वार्थी व अवसरवादी नहीं होना चाहिए।

2. गाँव वालों ने तालाब में पानी डाला।
3. एक बार एक राजा और मंत्री में विवाद चला। राजा ने कहा कि मनुष्य अधिकांशत: सच्चे होते हैं। इस बारे में मंत्री बोला कि अगर निगरानी रखी जाए, तभी मनुष्य सच्चे होते हैं। निगरानी के अभाव में सभी अवसर का लाभ उठाते हैं। आजकल सब अवसरवादी हैं। अपने स्वार्थ के लिए लोग बेईमान बन जाते हैं।
4. इस गद्यांश का शीर्षक हैं–'अवसरवाद'।
5. मंत्री ने एक पक्का तालाब बनवाया। फिर नगर में घोषणा करवाई गई कि तालाब में रात के समय हर घर से एक लोटा पानी डाला जाए। तालाब पर कोई चौकीदार नहीं रहेगा।

गद्यांश -घ

1. प्रेस को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा गया है।
2. संपादक का यह कर्त्तव्य है कि वह यह सुनिश्चित करे कि उसके अखबार में छपने वाली कोई घटना झूठी या जनता को भड़काने वाली न हो।
3. लेखक ने पत्रकारों से अपने उत्तरदायित्व समझने व सच्चाई को सामने लाने की अपील की है।
4. मीडिया का कर्त्तव्य।
5. स्वाधीनता - पराधीनता, नियंत्रण - अनियंत्रण।
6. प्राथमिकता - मूल शब्द - प्राथमिक प्रत्यय -ता
   सच्चाई - मूल शब्द + सच प्रत्यय - आई

(ङ) अपठित काव्यांश

1. कवि काम करने व निराश न होने की प्रेरण दे रहा है।
2. कवि निराश व्यक्ति को समझा रहा है।
3. कवि मनुष्य को संभलने के लिए कहता है, ताकि व्यक्ति का समय एवं सु-योग व्यर्थ न हो जाए।
4. कर्मपथ, जीवनपथ
5. अर्थ-व्यर्थ

अध्याय - 30 से 36

शिक्षक की सहायता से छात्र स्वयं करें।

ज्ञान सरोवर हिंदी व्याकरण

YELLOW BIRD PUBLICATIONS PVT. LTD.
EDUCATIONAL PUBLISHER

Regd. Off. : F-214, Laxmi Nagar, Delhi-110 092
Tel. : 91-11-4758 6784, 91-97116 18765
E-mail : yellowbirdpublications@gmail.com • info@yellowbirdpublications.com
Website : www.yellowbirdpublications.com